Barnebøker for Norge

barneboker.no

सिमबेगवाईर

Skrevet av: Rukia Nantale
Illustret av: Benjamin Mitchley
Oversatt av: Nandani

Denne fortellingen kommer fra African Storybook (africanstorybook.org) og er videreformidlet av Barnebøker for Norge (barneboker.no), som tilbyr barnebøker på mange språk som snakkes i Norge.

Dette verket er lisensiert under en Creative Commons Navngivelse 3.0 Internasjonal Lisens.
https://creativecommons.org/licenses/by/3.0/deed.no

सिमबेगवाईर

Rukia Nantale
Benjamin Mitchley
Nandani
hindi
nivå 5

(uten bilder)

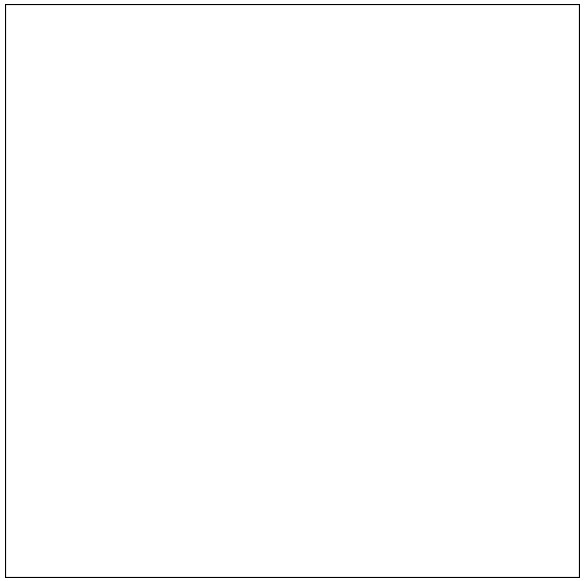

सिमबेगवाईर की माँ जब चल बसी, तब वह बहुत उदास थी।
सिमबेगवाईर के पिता ने उसकी देखभाल करने की हर संभव कोशिश की। धीरे-धीरे उन्होंने सिमबेगवाईर की माँ के बिना खुश रहना फिर से सीख लिया। हर सुबह वे बैठते और उस दिन की बात करते। हर शाम साथ में मिलकर रात का खाना बनाते। बर्तन धोने के बाद,
सिमबेगवाईरे के पिता उसे गृहकार्य में मदद करते।

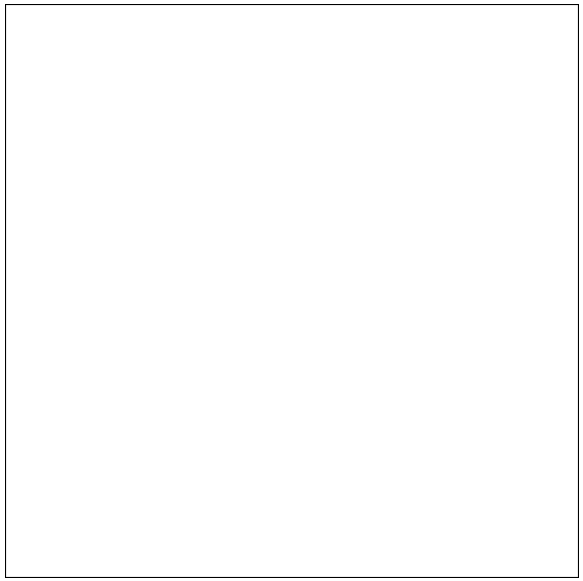

एक दिन, सिमबेगवाईर के पिता रोज से देर घर आये। “कहाँ हो मेरे बच्चे?” उन्होंने बुलाया। सिमबेगवाईर अपने पिता के पास भागी। वह रुक गई जब उसने देखा कि उसके पिता ने एक महिला का हाथ पकड़ा है। “मैं चाहता हूँ कि तुम किसी विशेष से मिलो, मेरी बच्ची। यह अनिता है, वे मुस्कुराये।”

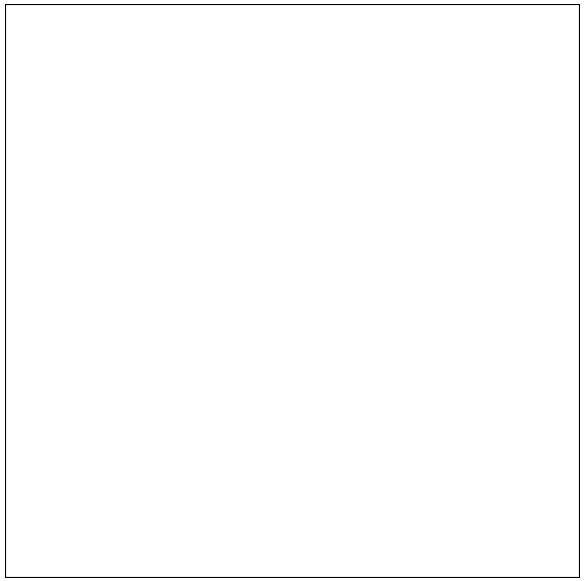

“नमस्ते सिमबेगवाईर, तुम्हारे पिता ने बहुत कुछ बताया है तुम्हारे बारे में,” अनीता ने कहा। पर वो मुस्कराई नहीं और बच्ची के हाथ को पकड़ा।सिमबेगवाईर के पिता खुश और उत्साहित थे। वे तीनों के साथ रहने की बात कर रहे थे और उनका जीवन कितना अच्छा हो सकता है। “मेरी बच्ची, मैं आशा करता हु कि तुम अनीता को माँ के रूप में स्वीकार करोगी,” उन्हों ने कहा।

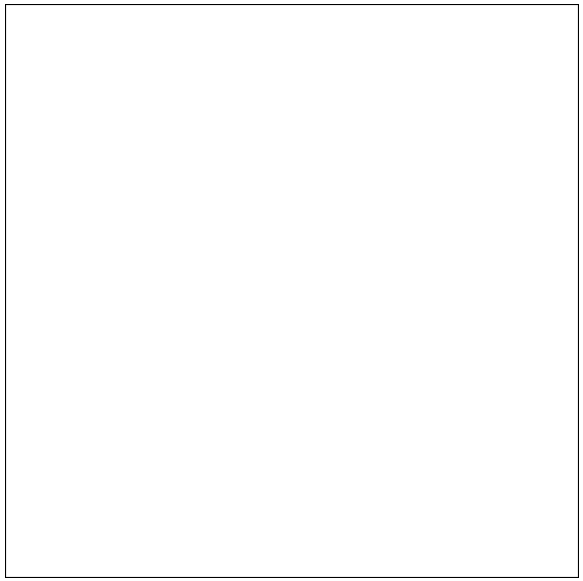

अगले सप्ताह अनीता ने सिमबेगवाईरे उसकी बुआ और फुफेरे भाई बहनों को अपने घर खाने पर बुलाया। क्या भोजन था! अनीता ने सभी खाना सिमबेगवाईरे के पसंद का बनाया था, सभी तब तक खाते रहे जब तक उनका पेट नहीं भर गया। फिर छोटे खेल रहे थे जब तक बड़े बात कर रहे थे। सिमबेगवाईरे को अच्छा लग रहा था साथ ही बहादुर महसूस कर रही थी। उसने फैसला लिया जल्द ही, बहुत जल्द, वह घर लौटेगी अपने पिता और सौतेली माँ के साथ रहने के लिए।

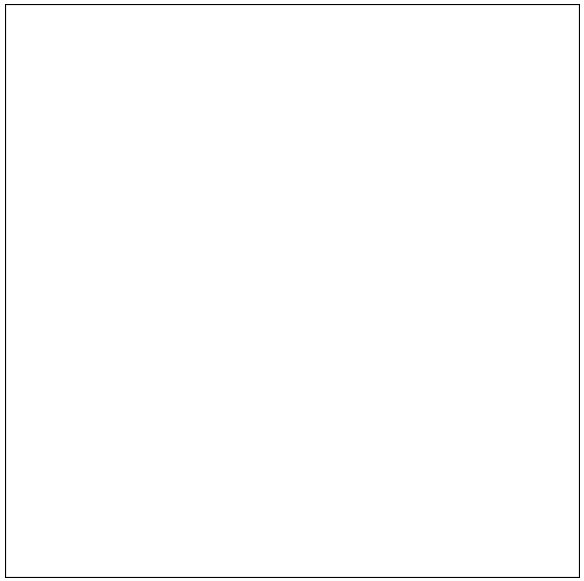

उसके पिता हर दिन उसके पास जाते। आखिरकार, वे अनीता के साथ आये उसने सिमबेगवाईरे का हाथ पकड़ा"मुझे माफ़ करना छोटी, मैं गलत थी," वह रोई। "क्या तुम दोबारा मौका दोगी?" सिमबेगवाईरे ने अपने पिता के तरफ देखा चिंता के साथ। फिर उसने धीरे-धीरे कदम बढ़ाया और अनीता को पकड़ लिया।

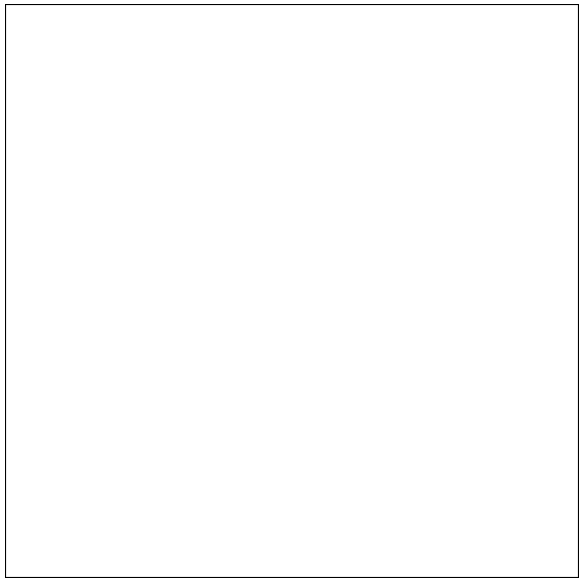

सिमबेगवाईरे का जीवन बदल गया।अब वह ज्यादा समय तक सुबह में पिता के साथ नहीं बैठ पाती। अनीता ने बहुत सारा घर का काम उसे दे रखा था जिसके कारण वह शाम को विद्यालय के कार्य के समय थक जाती। रात के खाने के बाद थक कर वह बिस्तर पर जाती। उसे एक ही चीज़ आराम देती वह था उसकी माँ का दिया हुआ रंगीन कम्बल। सिमबेगवाईरे के पिता यह नहीं देख पा रहे थे कि उनकी बेटी खुश नहीं है।

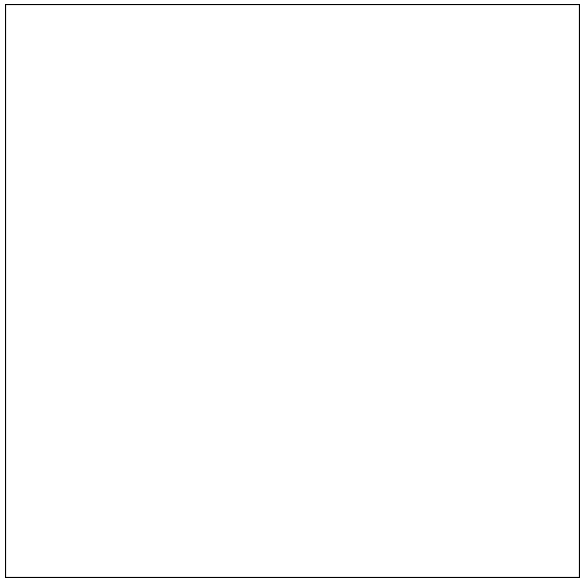

कुछ महीने बाद,सिमबेगवाईरे के पिता ने उनसे कहा कि वह कुछ दिनों के लिए घर से बाहर रहेगें।"मुझे काम से बाहर जाना है," उन्होंने कहा।"पर मुझे पता है कि तुम दोनों एक दूसरे का ध्यान रखोगे।" सिमबेगवाईरे का चेहरा उतर गया,लेकिन उसके पिता ने ध्यान नहीं दिया। अनीता ने कुछ नहीं कहा। वह भी खुश नहीं थी।

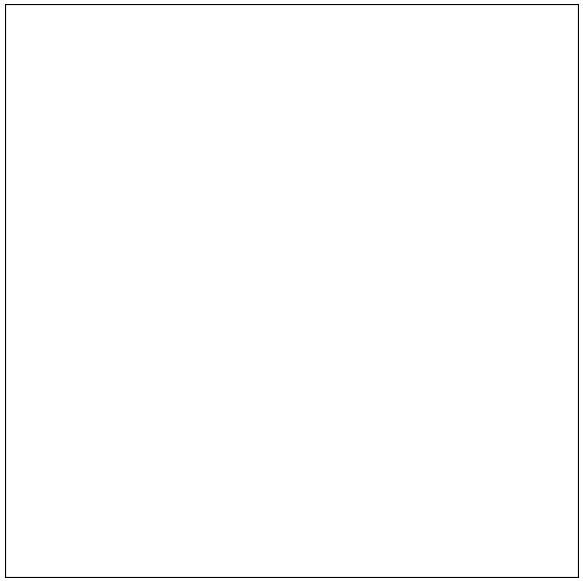

सिमबेगवाईरे अपनी फुफेरी बहन के साथ खेल रही थी जब उसने दूर से पिता को देखा। वह डर गई कि कही वह गुस्सा हो, इस लिए छिपने के लिए घर में भाग गई। लेकिन उसके पिता उसके पास गए उन्होंने कहा,"सिमबेगवाईरे, तुमने अपने लिए सही माँ को खोज लिया है। वह जो तुमको समझती है और प्यार करती है। मुझे तुम पर नाज़ है और मैं तुमसे प्यार करता हूँ ।" वह तैयार हो गए कि जबतक सिमबेगवाईरे चाहे वह अपनी बुआ के साथ रह सकती है।

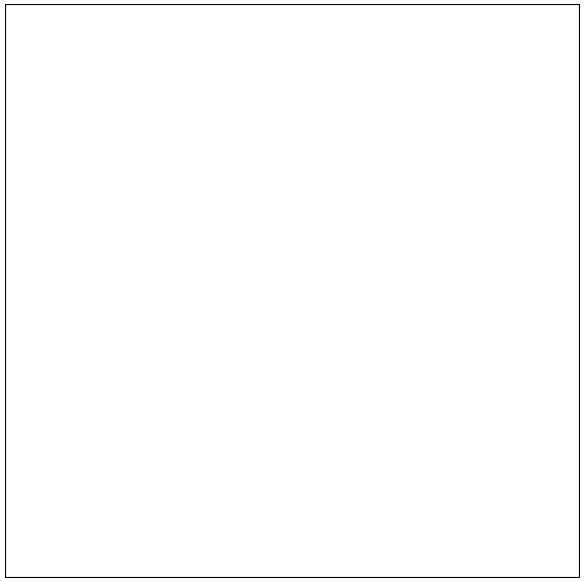

जब सिमबेगवाईरे के पिता घर आये, उन्होंने उसका कमरा खाली पाया। “क्या हुआ अनीता?” उन्होंने ने भरे मन से पूछा । उस महिला ने बताया कि सिमबेगवाईरे घर से भाग गई। “मैं चाहती थी कि वह मेरा सम्मान करे” उसने कहाँ। “शायद मैं ज्यादा सख्त हो गई”
सिमबेगवाईरे के पिता घर से निकल गए और झरने के तरफ़ चल दिये। उन्होंने ने अपनी बहन के गाँव में खोजना शुरू किया कि शायद उसने सिमबेगवाईरे को देखा हो

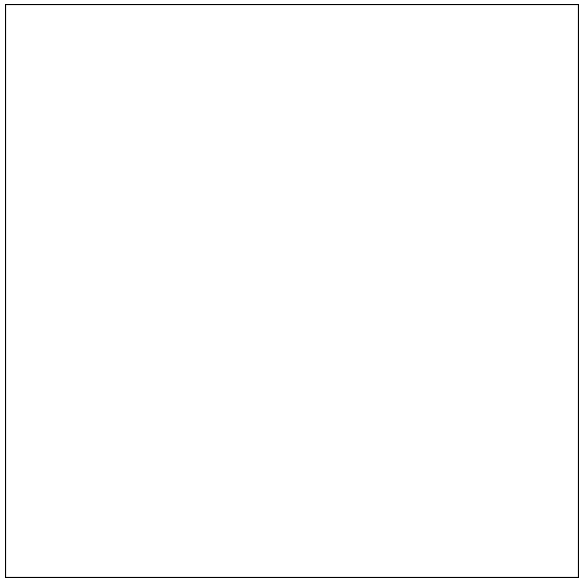

यह सिमबेगवाईरे के लिए बहुत ही बुरा हुआ। अगर वह अपना काम नहीं करती या शिकायत करती तो अनीता उसे मारती। और वह औरत रात के खाने में अधिकतर खाना खा जाती,सिमबेगवाईरे के लिए जूठन छोड़ती।सिमबेगवाईरे हर रात अकेले में रोती और माँ के कम्बल को गले से लगा लेती।

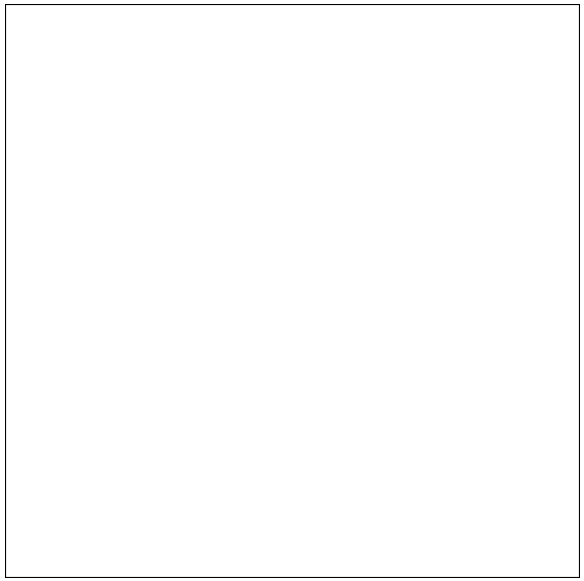

एक सुबह,सिमबेगवाईरे देर से उठी। “आलसी लड़की!” अनीता चिलाई। उसने सिमबेगवाईरे को बिस्तर से खिंचा।उस अमूल्य कम्बल को नाखून से नोचा, और दो भागों में फाड़ दिया।

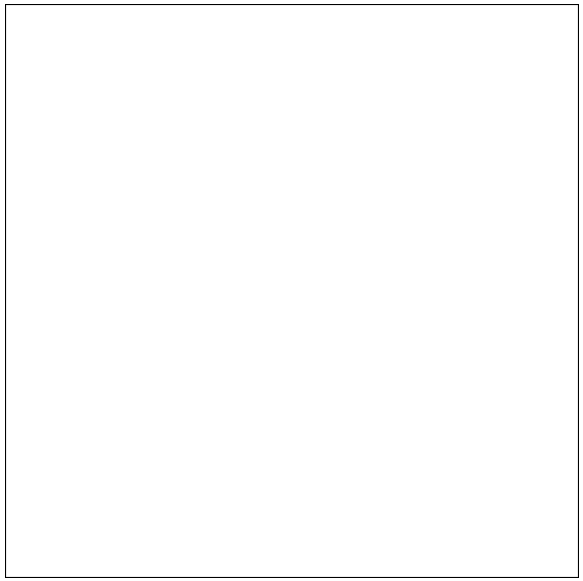

सिमबेगवाईरे की बुआ बच्ची को घर ले गई। सिमबेगवाईरे को गर्म खाना दिया और उसकी माँ के कम्बक के साथ बिस्तर में सुला दिया। उस रात,सिमबेगवाईरे रोने लगी जब सोने गई। लेकिन ये आँसू खुशी के थे। वह जानती थी कि उसकी बुआ उसका देख भाल अच्छे से करेगी।

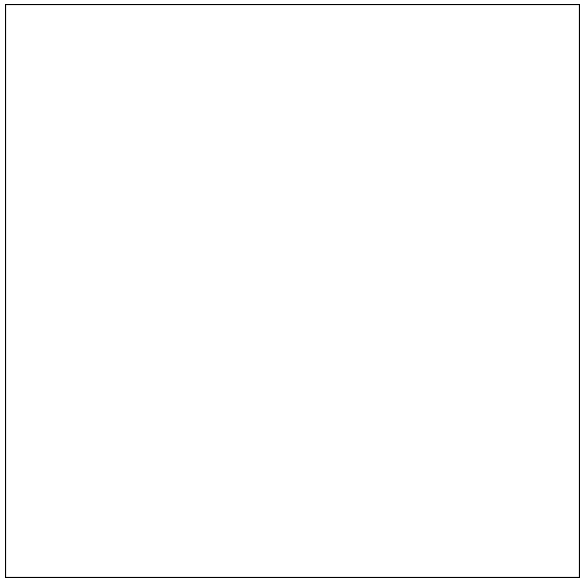

उस महिला ने पेड़ के अंदर देखा। जब उसने लड़की और रंगीन कम्बक के टुकड़ों को देखा, वह चिलाई, सिमबेगवाईरे, “मेरे भाई की बेटी!” दूसरी महिला ने धोना रोक दिया और सिमबेगवाईरे की मदद की पेड़ से उतरने में। उसकी बुआ ने छोटी सी लड़की को गले से लगाया और कोशिश किया कि उसे अच्छा लगे।

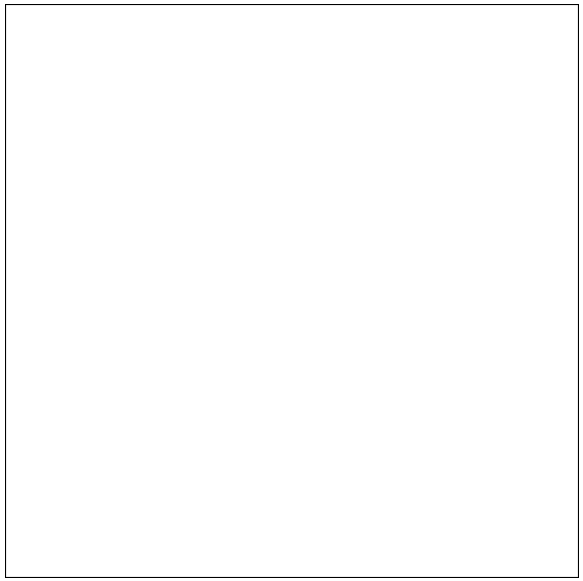

सिमबेगवाईरे बहुत उदास हो गई। उसने घर से भागने फैसला किया। उसने अपनी माँ के कम्बल के टुकड़ों को ले लिया और कुछ खाने के समान को और फिर घर से चली गई। वह उसी रास्ते पर चलने लगी जिससे उसके पिता गए थे।

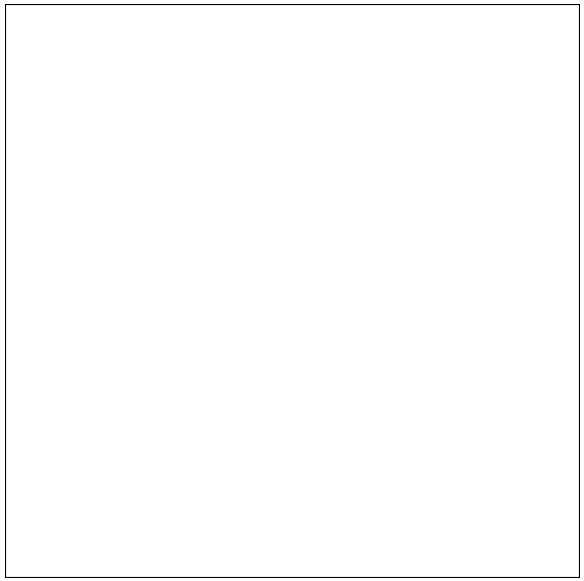

जब शाम हुई वह ऊँचे पेड़ पर चढ़ गई जो झरना के पास था और अपने लिए टहनियों के बीच में बिस्तर बना लिया। जब वह सोने लगी, उसने गाना गाया: “माँ, माँ, माँ, तुमने मुझे छोड़ दिया। तुम मुझे छोड़ कर चली गई और फिर कभी वापस नहीं आई। पिता कही से भी प्यार नहीं करते।माँ, कब तुम वापस आओ गी? तुमने मुझे छोड़ दिया।”

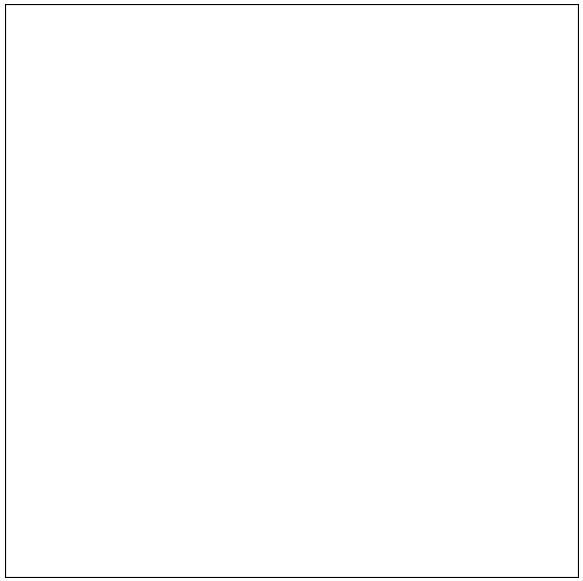

अगली सुबह,सिमबेगवाईरे ने फिर से गाना गाया। जब औरते झरने पर कपड़े धोने आई थी, उन्होंने वह गाना सुना जो बड़े से पेड़ से आ रहा था। उन्होने सोचा यह केवल हवा है जो पत्तो से टकरा रही है और वह अपना काम करती रही। लेकिन उनमें से एक महिला ने बड़े ध्यान से गाना सुना।